UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-38

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Type a message
Broadcast
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

8209837844
www.ugc-net.com
NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

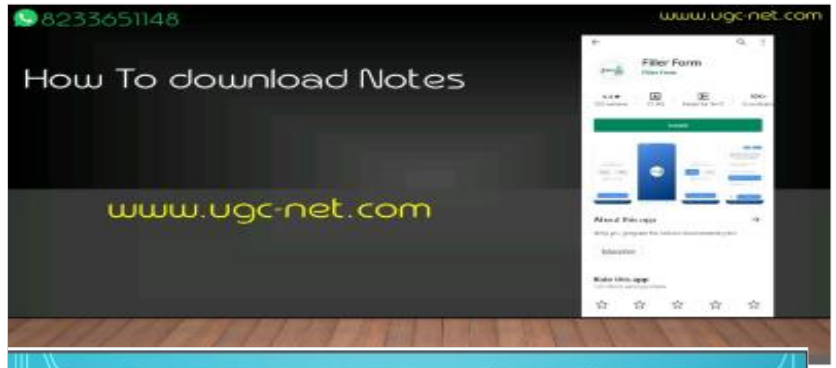
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

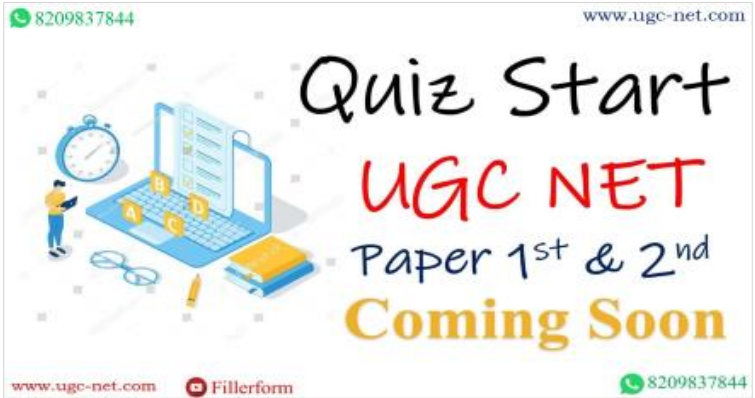
8209837844
www.ugc-net.com
Quiz Start
UGC NET
Paper 1st & 2nd
Coming Soon
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC NET PAPER = SANSKRIT...
JRF का जलवा
27 th march 2022
Google Meet
Time = 6 pm
NIDHU CHAUDHARY
B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

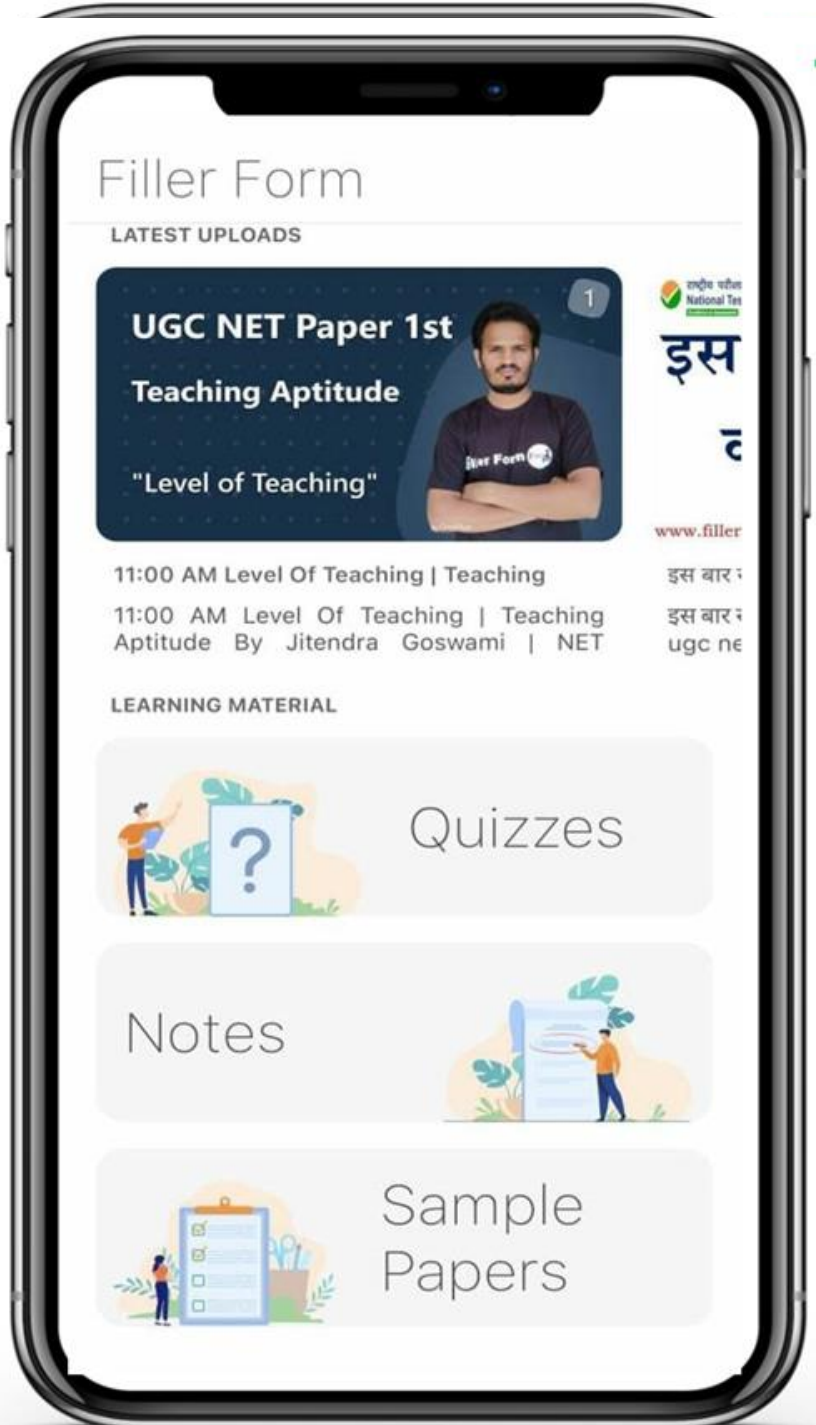

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

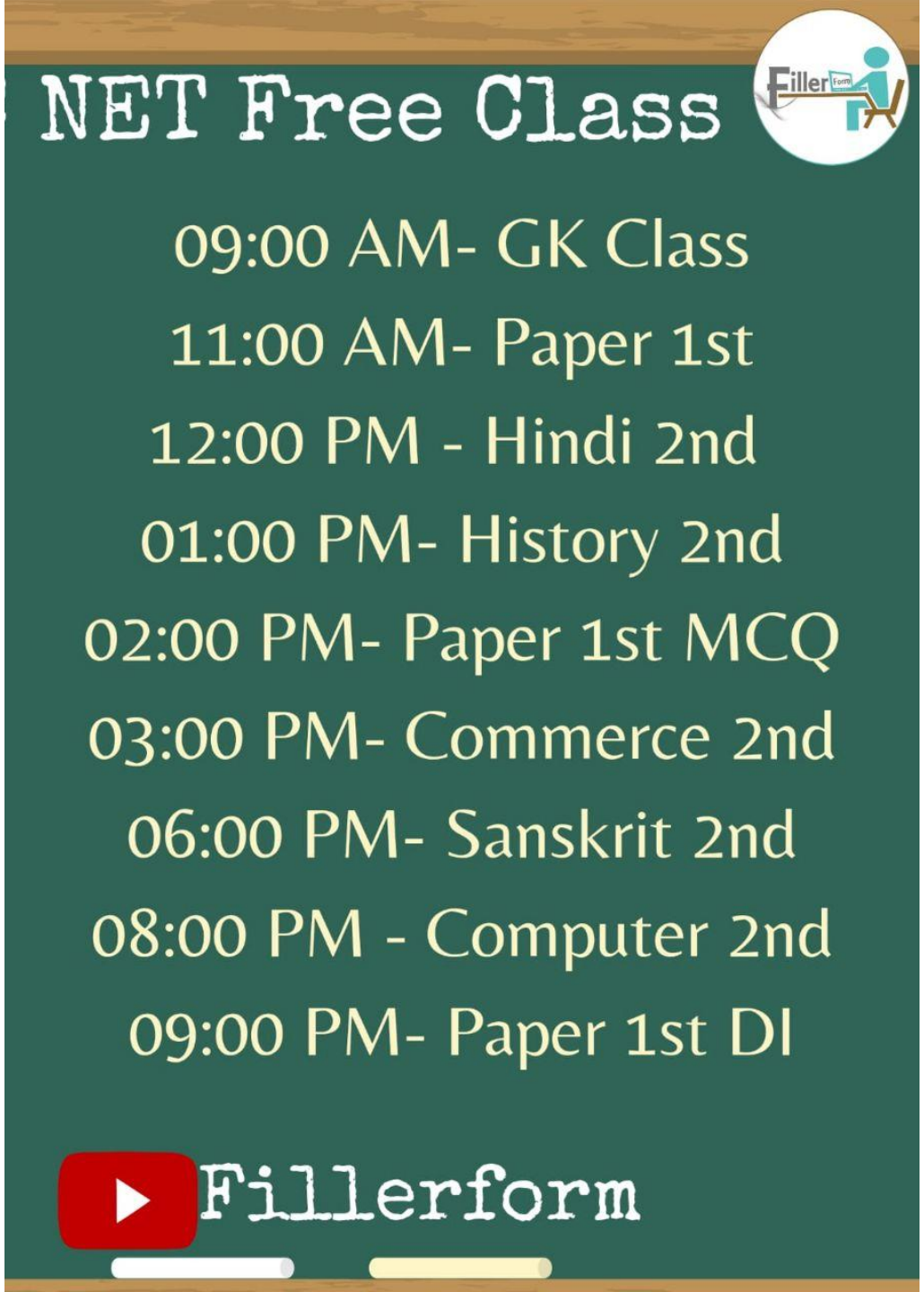

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

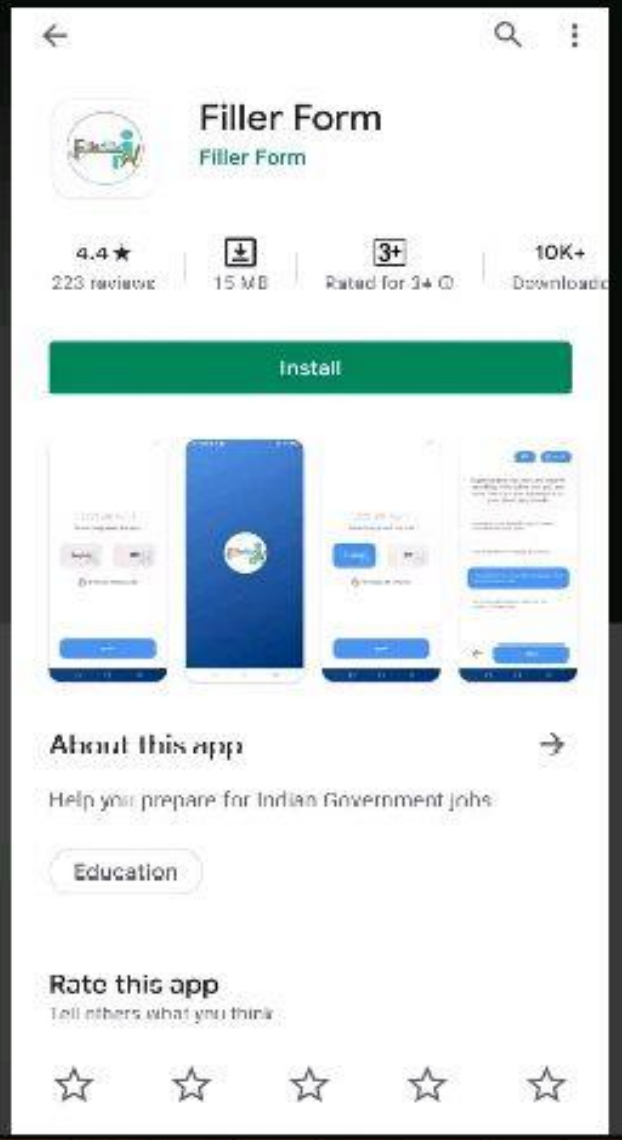

Quiz Start

UGC NET

Paper 1st & 2nd

Coming Soon

UGC NET PAPER = SANSKRIT...

JRF का जलवा

27 th march 2022

Google Meet

Time = 6 pm

NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

Home work Answer.....

24. कस्मिन् ग्रन्थे प्राधान्येन षोडशपदार्थाः प्रतिपाद्यन्ते?

(A) सांख्यकारिकायाम्
(B) तर्कभाषायाम्
(C) वेदान्तसारे
(D) तर्कसंग्रहे

25. स्मृतिव्यतिरिक्तं ज्ञानं किम् -

(A) स्मृतिः
(B) अनुभवः
(C) ज्ञानम्
(D) अज्ञानम्

Today's Topic...

अर्थसंग्रह

* भावना के भेद *

१. शाब्दीभावना
२. आर्थीभावना

भावना के भेद

'आख्यात लिंङ्गेन भावना उत्पद्यते'।

आख्यातत्त्व और लिङ्ग इन दोनों अंशों से भावना का ही बोध होता है।

8209837844 www.ugc-net.com

भावना

लक्षण- "भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः"। 'भवितुः' उत्पन्न होने वाले का भवनानुकूल, उत्पत्तिजनक जो 'भावयितुः' (प्रयोजक) का व्यापार विशेष है, वही 'भावना' है। भावना के दो भेद होते हैं- 1. शाब्दीभावना 2. आर्थीभावना,

8209837844
www.ugc-net.com

1. शाब्दीभावना-

"पुरुषप्रवृत्यनुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः शाब्दीभावना" । पुरुष की प्रवृत्ति के अनुकूल प्रयोजक, वेद या आचार्य (भावयितु) के व्यापारविशेष को 'शाब्दीभावना' कहते हैं। यह शाब्दीभावना **'लिङ्'** का (वाच्य) अर्थ है। क्योंकि लिङ् अंश के श्रवण होने पर (प्रयोज्य) पुरुष को यह बोध होता है कि यह (प्रयोजक) पुरुष मुझे कार्य में प्रवृत्त कराना चाहता है अर्थात् यह प्रयोजक पुरुष **'मत्प्रवृत्तिजनक व्यापार'** वाला है। यही व्यपार 'लिङ्वाच्य' 'शाब्दीभावना' है क्योंकि जो जिस शब्द से नियमतः प्रतीत होता है वह उस शब्द का (वाच्य) अर्थ है। **जैसे- 'गामानय'** गाय लाओ इस 'वाक्य' में गो शब्द का अर्थ **'गोत्व'** है।

वह व्यापारविशेष शाब्दीभावना **'लौकिक'** वाक्य में प्रवर्तक **'पुरुषनिष्ठ'** अभिप्राय विशेष से रहती है। **'वैदिक'** वाक्य में प्रवर्तक पुरुष के अभाव के कारण **'लिङ्गादि'** शब्दनिष्ठ होती है। इसी कारण से इसे 'शाब्दीभावना' कहा जाता है।

8209837844 www.ugc-net.com

शाब्दीभावना के अंशत्रय-

साध्य	किं भावयेत् ?	-	आर्थीभावना
साधन	केन भावयेत् ?	-	लिङ्गादिज्ञान
इतिकर्तव्यता	कथं भावयेत् ?	-	प्राशस्त्यादि वचन

8209837844 www.ugc-net.com

2. आर्थीभावना-

"प्रयोजनेच्छाजनित क्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना"।

स्वर्गादि प्रयोजन को लक्ष्य करके यागादि कर्म को सम्पादित करने का पुरुष में जो मानसिक व्यापार उत्पन्न होता है, उसे आर्थीभावना कहते हैं। यह आर्थी भावना 'आख्यात' अंश अर्थात् 'तिङ्' का अर्थ है क्योंकि व्यापार या क्रिया का वाचक आख्यात सामान्य ही होता है।

8209837844 www.ugc-net.com

आर्थीभावना के अंशत्रय-

साध्य	किं भावयेत् ?	-	स्वर्गादिफ़ल
साधन	केन भावयेत् ?	-	यागादि
इतिकर्तव्यता	कथं भावयेत् ?	-	प्रयाजादि अङ्ग

8209837844 www.ugc-net.com

वेदलक्षणविचार

वेद- "अपौरुषेयं वाक्यं वेदः" । अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं ।

"तत्र धर्मब्रह्मप्रतिपादकमपौरुषेयं प्रमाणवाक्यं वेदः"। धर्म और ब्रह्म के प्रतिपादिक अपौरुषेय प्रमाणित वाक्य को 'वेद' कहते हैं ।

8209837844

www.ugc-net.com

वेद के पांच प्रकार-

1. विधि 2. मन्त्र 3. नामधेय 4. निषेध 5. अर्थवाद।

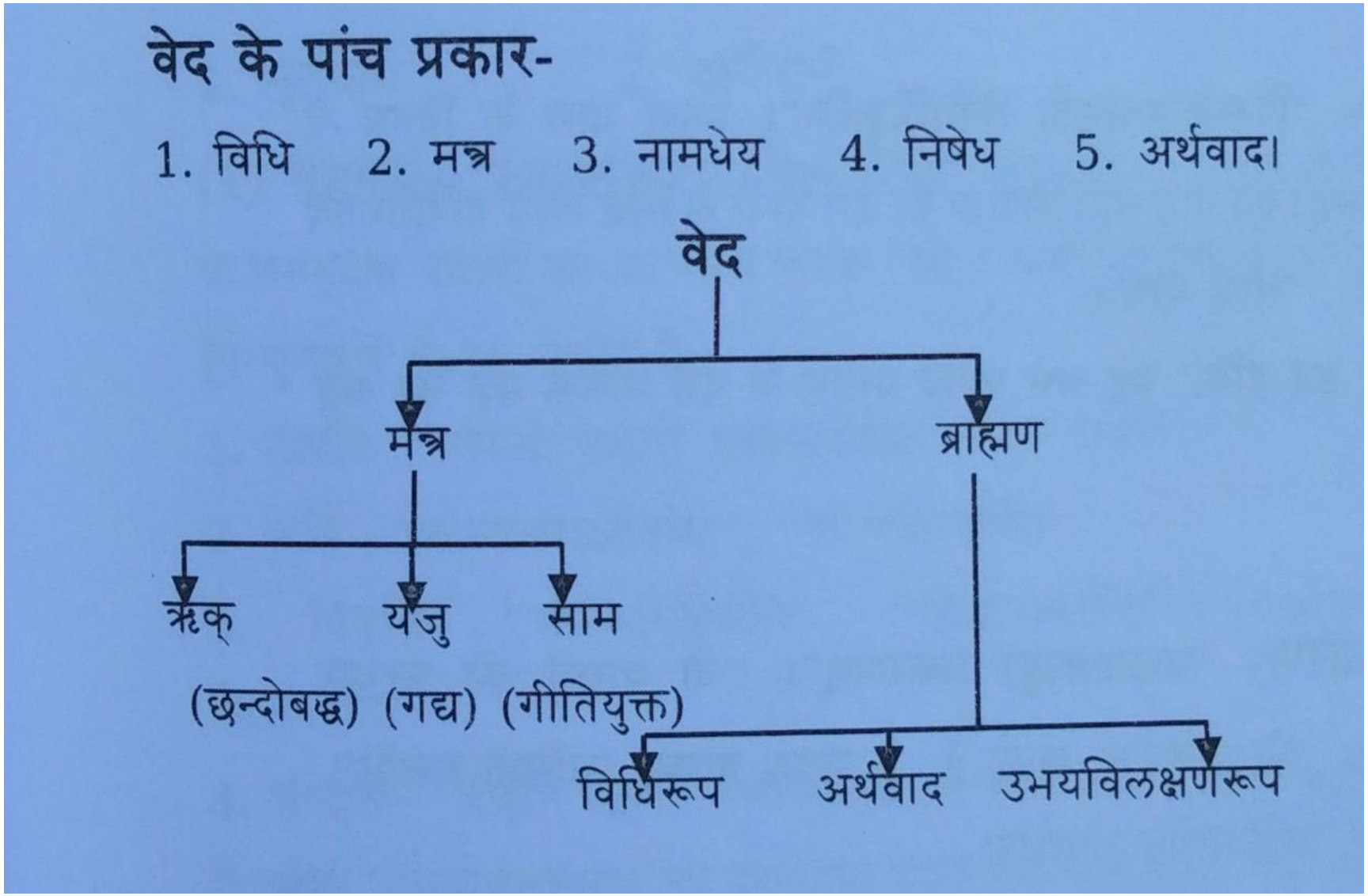

8209837844 www.ugc-net.com

(1) विधिः

"तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः" अज्ञात अर्थ को अवबोधित कराने वाले वेद भाग को विधि कहते हैं। वह विधि – जो अर्थ (प्रमाणान्तर) दूसरे प्रमाण से ज्ञात नहीं है उसका विधान करती है, इसलिये प्रमाणान्तर अज्ञात एवं प्रयोजन युक्त अर्थ के विधान से ही विधि की सार्थकता होती है। **उदाहरण-** **"अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः"**।

गुणविधिः

"यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन गुणमात्रं विधत्ते"। जहाँ पर यागादि कर्म का विधान किसी अन्य प्रमाण से सिद्ध हो वहाँ पर उस विधि कर्म को उपदेश करके गुणमात्र (अर्थात् अङ्गभूत द्रव्य या देवता) का विधान होता है। **उदाहरण-** **"दध्ना जुहोति"**।

8209837844 www.ugc-net.com

विशिष्ट विधि

"यत्र तु उभयमपि अप्राप्तं तत्र विशिष्टं विधत्ते"। जहाँ पर गुण और कर्म दोनों प्रमाणान्तर से प्राप्त नहीं रहते हैं वहाँ विधि द्वारा दोनों **'गुणविशिष्ट'** कर्म का विधान होता है । **उदाहरण- "सोमेन यजेत"** ।

विधि के चार प्रकार-

"विधिश्चतुर्विधः- उत्पत्तिविधिः विनियोगविधिः अधिकारविधिः प्रयोगविधिश्चेति"।

1. उत्पत्ति विधि
2. विनियोग विधिः
3. प्रयोगविधिः
4. अधिकारविधि।

8209837844
ww.ugc-net.com

2. विनियोग विधिः-

"अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधकोविधिर्विनियोगविधिः"। द्रव्य देवतादि रूप अङ्गों का प्रधान होमादि के साथ सम्बन्ध बोधक विधि को विनियोग विधि कहते हैं। **उदाहरण- "दध्ना जुहोति"**। यहाँ पर **'दध्ना'** इस तृतीया श्रुति से बोधित दधिरूप अङ्ग का **"अग्निहोत्रं जुहोति"** इस वाक्य से बोधित अग्निहोत्र रूप प्रधान (अङ्गी) के साथ सम्बन्ध का विधान करता है, अतः **'दध्ना जुहोति'** यह विनियोग विधि है, और इससे **"दध्ना होमं भावयेत"** यह बोध होता है।

विनियोग विधि में धात्वर्थ होम का 'साध्यत्व' रूप से अन्वय होगा और कहीं-कहीं धात्वर्थ का अन्वय आश्रय रूप में भी किया जाता है। **जैसे- "दध्नेन्द्रियकामस्य जुहुयात"** इस गुण विधि में धात्वर्थ का अन्वय आश्रय रूप में होता है, और **"दधिकरणत्वेन इन्द्रियं भावयेत्"** यह अर्थ होगा। अर्थात् दधिकरणत्व से इन्द्रिय रूपी फ़ल की कामना करें।

इस विधि के छः सहायक प्रमाण हैं-

8209837844 www.ugc-net.com

1. श्रुति 2. लिङ्ग

3. वाक्य 4. प्रकरण

5. स्थान 6. समाख्या

इनके सहयोग से यह विधि अङ्गत्व का बोध कराती है। **'अङ्गत्व'** (पारार्थ्य) का पर्याय शब्द है। अङ्गत्व का लक्षण है- **"परोद्देशप्रवृत्तकृतिसाध्यत्वम्"** परोद्देश (स्वर्गादि फ़ल) के उद्देश्य से प्रवृत्त पुरुष का जो कृतिसाध्य हो उसी को अङ्ग कहते हैं।

8209837844 www.ugc-net.com

1. श्रुति-

"निरपेक्षोरवः श्रुतिः"। जो प्रमाणान्तर की अपेक्षा नहीं रखता है ऐसे 'रव' (शब्द) को श्रुति कहते हैं। श्रुति के तीन भेद हैं-

1. **विधात्री-विधानकर्त्री-** **'लिङ्'** आदि श्रुति को 'विधात्री' श्रुति कहते हैं।
2. **अविधात्री-अभिधानकर्त्री-** **'व्रीह्यादि'** शब्द को 'अभिधात्री' श्रुति कहते हैं।
3. **विनियोक्त्री-विनियोगकर्त्री-** जिस शब्द के श्रवणमात्र से अङ्गाङ्गिभाव का ज्ञान हो जाता है, उसे 'विनियोक्त्री' श्रुति कहते हैं।

विनियोक्त्री श्रुति के तीन प्रकार हैं-

1. विभक्तिरूपा 2. समानाभिधानरूपा 3. एकपदरूपा।

8209837844 www.ugc-net.com

उदाहरण-

1. विभक्तिरूपा-

द्वितीया विभक्ति- 'व्रीहीन् प्रोक्षति'। 'अश्वाभिधानीम् आदत्ते'।

तृतीया विभक्ति- 'व्रीहिभिर्यजेत'। यहाँ पर तृतीया विभक्ति के सुनने पर व्रीहि याग का अङ्ग ज्ञात होता है। व्रीहि पुरोडाश की प्रकृति होने से याग का अङ्ग बनते हैं, साक्षात् नहीं।

'अरुणया पिङ्गाक्ष्या एकहायन्या गवां सोमं क्रीणाति'। यहाँ पर **'आरुण्य'** क्रयण का अङ्ग साक्षात् रूप से नहीं है, अपितु **'गोरूप पिण्ड'** के ज्ञापक रूप में है।

चतुर्थ विभक्ति- 'मैत्रावरुणाय दण्डं प्रयच्छति'।

पञ्चमी विभक्ति- 'अग्नेस्तृणान्यपचिनोति'।

षष्ठी विभक्ति- 'यजमानस्य याज्या'

सप्तमी विभक्ति- 'यदाहवनीये जुहोति'।

8209837844

w.ugc-net.com

2. समानाभिधानरूपा, 3. एकपदरूपा - **'पशुना यजेत'**। इस उदाहरण में 'टा' रूप एकवाचक (एकाभिधानश्रुति) से एकत्व और पुंस्त्व दोनों (करण) रूप कारण के अङ्ग हैं। **'पशुना'** इस **'एकपदश्रुति'** से पशुरूप द्रव्य के अङ्ग होते हैं। इसी प्रकार **'यजेत'** में आख्यात **'तिङ्'** का भावना एवं **'एकत्व'** संख्या अर्थ है। अतः **'त'** रूप एकाभिधानश्रुति से एकत्वसंख्या भावना का अङ्ग होती है, एवं **'यजेत'** एकपदश्रुति से 'संख्या' याग का अङ्ग है।

2. लिङ्ग- "शब्दसामर्थ्यं लिङ्गं"। शब्द सामर्थ्य को ही लिङ्ग कहते हैं। **'सामर्थ्यं सर्वशब्दानां लिङ्गमित्यभिधीयते'**। अर्थात् सब शब्दों का जो सामर्थ्य है उसी को लिङ्ग कहते हैं। समाख्या से रूढ्यात्मक शब्द भिन्न होता है। **'बर्हिर्देवसदनं दामि'** यह मन्त्र कुश छेदन (कुशलवन) क्रिया का अङ्ग है।

8209837844
www.ugc-net.com

3. **वाक्य-** **"समभिव्याव्हारो वाक्यम्"**। समभिव्यावहार अर्थात् सहोच्चारण को वाक्य कहते हैं ।

उदाहरण- "यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति न स पापं श्लोकं शृणोति"

वाक्यार्थ- "पर्णतयावत्तहविर्धारणद्वाराजुह्वपूर्वं भावयेत्"

प्रकृति- "सम्पूर्णाङ्गसहितो विधिः प्रकृतिः"। जिस याग के विषय में समस्त अङ्गों का पाठ मिलता है। **यथा- 'दर्शपौर्णमासादि'** ।

विकृतिः- "विकलाङ्गसंयुतो विधिर्विकृतिः"। जिस याग के विषय में समस्त अङ्गों का पाठ नहीं मिलता है। इन दोनों से भिन्न विधि दर्विहोमादि है। **यथा- 'सौर्य याग'**।

'इन्द्राग्नी इदं हविः' यह मन्त्र वाक्य प्रमाण से दर्श नामक यज्ञ का अङ्ग होता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

4. प्रकरण- "उभयाकाङ्क्षा प्रकरणम्"। दो वाक्यों की परस्पर आकाङ्क्षा को 'प्रकरण' कहते हैं । **यथा- वाक्य-** 'समिधो यजति'।

वाक्यार्थ- 'समिद्यागेन भावयेत।

वाक्य- 'दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत' ।

वाक्यार्थ- 'दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गं भावयेत'।

प्रकरण के दो प्रकार -

1. **महाप्रकरण-'मुख्यभावनासम्बन्धिप्रकरणं महाप्रकरणम्'।**

महाप्रकरण प्रकृति याग में प्रवृत्त होता है ।

2. **अवान्तरप्रकरण- 'अङ्गभावनासम्बन्धिप्रकरणमवान्तरप्रकरणम्'।**

इस प्रकार के अङ्गत्व का बोध **'सन्दंश'** के द्वारा होता है ।

सन्दंश- 'एकाङ्गानुवादेन विधीयमानयोरङ्गयोरन्तराले विहितत्वं सन्दंशः'।

प्रधान याग के एक अङ्ग का अनुवाद करके विधीयमान दो अङ्गों के मध्य में किये जाने वाले विधान को 'सन्दंश' कहते हैं । **यथा- 'समानयते जुह्वाम् उपभृतस्तेजो वा'** ।

8209837844 www.ugc-net.com

5. स्थान- "देशसामान्यं स्थानम्"। देश की समानता को स्थान कहते हैं। स्थान के दो भेद हैं-

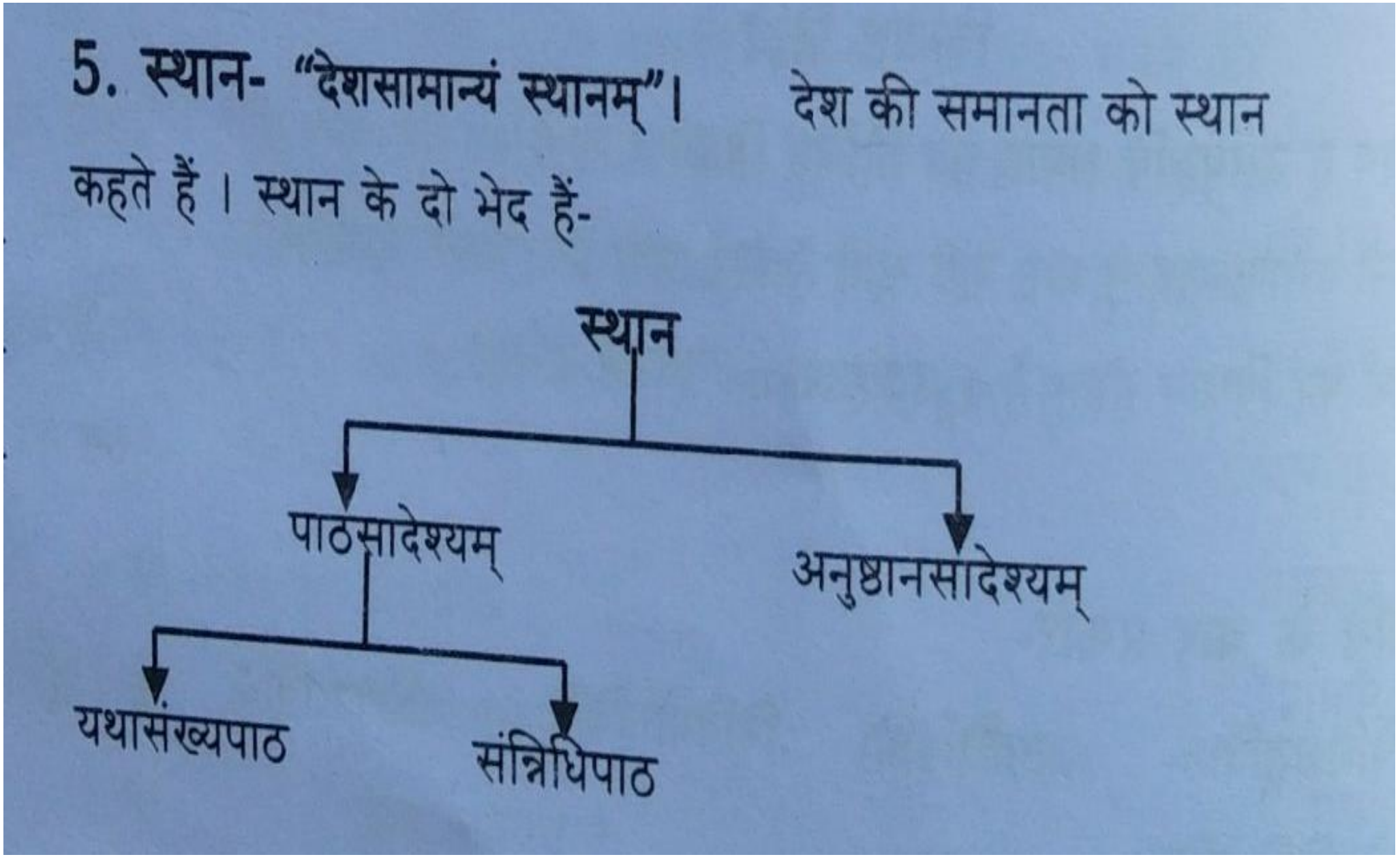

8209837844 www.ugc-net.com

6. **समाख्या-** "समाख्या यौगिकः शब्दः"। यौगिक शब्दों को समाख्या कहते हैं । समाख्या के दो भेद हैं-

1. **वैदिकी- 'होतृचमस'** ('होता' सोमरस भक्षण का अङ्ग)**चमस-**सोमरस
2. **लौकिकी- 'आध्वर्यवम्'** ('अध्वर्यु' तत्तत् क्रियाओं का अङ्ग)

820981 -net.com

3. प्रयोगविधिः

"प्रयोगप्राशुभावबोधकोविधिः प्रयोगविधिः"

जिस विधि वाक्य से प्रयोग को शीघ्र करने का बोध होता है, उसे 'प्रयोगविधि' कहते हैं। अङ्गों के सहित प्रधान कर्म के प्रयोग की एकता का बोधक अर्थात् पूर्वोक्त तीन विधियों के सम्मेलन रूप प्रयोग विधि कहलाती है। कुछ लोग उसको श्रौत मानते हैं, तथा कुछ विज्ञान कल्प्य भी मानते हैं।

अङ्गानां क्रमबोधको विधिः प्रयोगविधिः । क्रमो नाम वितातिविशेषः पौर्वापर्यस्वरूपम् ।

यथा- "दर्शपौणमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत्"।

इस विधि के छः सहायक प्रमाण हैं-

8209837844 www.ugc-net.com

1. श्रुति,
2. अर्थ,
3. पाठ,
4. स्थान,
5. मुख्य,
6. प्रवृत्ति

8209837844 www.ugc-net.com

4. अधिकारविधि

"कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधकोविधिःअधिकारविधिः"। यागादि कर्मजन्य स्वर्गादि फ़ल के स्वामित्व अर्थात् अधिकारी बोधक विधि को अधिकारविधि कहते हैं । कर्मजन्यफलस्वाम्यत्वम्- कर्मजन्यफलभोक्तृत्वम् । यथा- 'यजेत स्वर्गकामः'। 'यस्याहिताग्नेरग्निर्गृहान् दहेत् सोऽग्नये क्षामवतेऽष्टाकपालं निर्वपेत'। 'अहरहः सन्ध्यामुपासीत'।

8209837844 www.ugc-net.com

(2) मन्त्र

मन्त्राः- **"प्रयोगसमवेतार्थस्मारका मन्त्राः"**। प्रयोग (अनुष्ठान) से समवेत (सम्बद्ध) अर्थ (द्रव्य देवतादि) का जो स्मरण कराते हैं उन्हें मन्त्र कहते हैं । **"अनुष्ठानकारकभूतद्रव्यदेवताप्रकाशकाः मन्त्राः"**।

अर्थस्मरणरूप दृष्ट फ़ल प्रकारान्तर (ब्राह्मण वाक्यों) से भी प्राप्त है अतः मन्त्रोच्चारण व्यर्थ है । यह कहना उचित नहीं है क्योंकि **"मन्त्रैरेव स्मर्तव्यम्"**। 'मन्त्रों से ही अर्थ का स्मरण करें' इस नियमविधि का आश्रय लेने से मन्त्रोच्चारण व्यर्थ नहीं होता है ।

नियमविधि-"नानासाधनसाध्यक्रियायामेकसाधनप्राप्तावप्राप्तस्यापरसाधनस्य प्रापको विधिर्नियमविधिः"। जहाँ पर नाना साधनों से क्रिया की सिद्धि सम्भव हो उनमें एक साधन के प्राप्त रहने पर अप्राप्त दूसरे साधनों की प्राप्ति कराने वाली 'प्रापक' विधि को 'नियमविधि' कहते हैं । तन्त्रवार्त्तिककार 'कुमारिलभट्ट' ने कहा है-

8209837844 www.ugc-net.com

"विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति
तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते"॥

'अत्यन्त अप्राप्त पदार्थ का विधान कराने वाली विधि को **'अपूर्वविधि'** पदार्थ के पाक्षिक अप्राप्ति होने पर उसका विधान कराने वाले वाक्य को **'नियमविधि'** तथा जहाँ दोनों पदार्थों की एक ही काल में प्राप्ति हो, वहाँ दोनों में से एक पदार्थ की निवृत्ति कराने वाली विधि को **'परिसंख्याविधि'** कहते हैं' ।

1. **अपूर्वविधि- 'प्रमाणान्तरेणाप्राप्तस्य प्रापको विधिरपूर्वविधिः'।**
   प्रमाणान्तर से अप्राप्त की प्रापक विधि को 'अपूर्वविधि' कहते हैं ।
   उदाहरण- 'यजेत् स्वर्गकामः'।
2. **नियमविधि- 'पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापको विधिः नियमविधिः'।** पक्ष में अप्राप्त पदार्थ की प्राप्ति का विधान करने वाली विधि को 'नियमविधि' कहते हैं । **उदाहरण- 'व्रीहीन् अवहन्ति'।**

8209837844 .ugc-net.com

3. **परिसंख्याविधि-** 'उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितरव्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्याविधिः'। एक ही समय में दो की प्राप्ति रहने पर दूसरे के निवृत्तिपरक विधिवाक्य को 'परिसंख्याविधि' कहते हैं ।

उदाहरण- 'पञ्च पञ्च नखा भक्ष्याः'।

परिसंख्याविधि के दो भेद हैं-

1. **श्रौती-** **'अत्र हि एव आवपन्ति'** । अर्थात् यहीं पर (अवाप=साम) प्रक्षेपण करते हैं। यहाँ 'एव' शब्द से (स्तोत्र विशेष का नाम) से अतिरिक्त स्तोत्रों की निवृत्ति समझी जाती है ।

2. **लाक्षणिकी-** **'पञ्च पञ्च नखा भक्ष्याः'**। यहाँ पर **'इतरनिवृत्तिवाचक'** पद के अभाव में (अर्थात् **'एव'** की तरह निवृत्ति सूचक पद नहीं है) उसकी लक्षणा द्वारा कल्पना करनी पड़ती है ।

8209837 gc-net.com

लाक्षणिकी परिसंख्याविधि के तीन दोष हैं-

1. श्रुतहानि 2. अश्रुतकल्पना 3. प्राप्तबाध

"श्रुतार्थस्य परित्यागादश्रुतार्थप्रकल्पनात्,
प्राप्तस्य बाधादित्येवं परिसंख्या त्रिदूषणा"।

इनमें से प्रथम दो दोष **'शब्दनिष्ठ'** (श्रावणसम्बन्ध) हैं और तीसरा दोष **'अर्थनिष्ठ'** है।

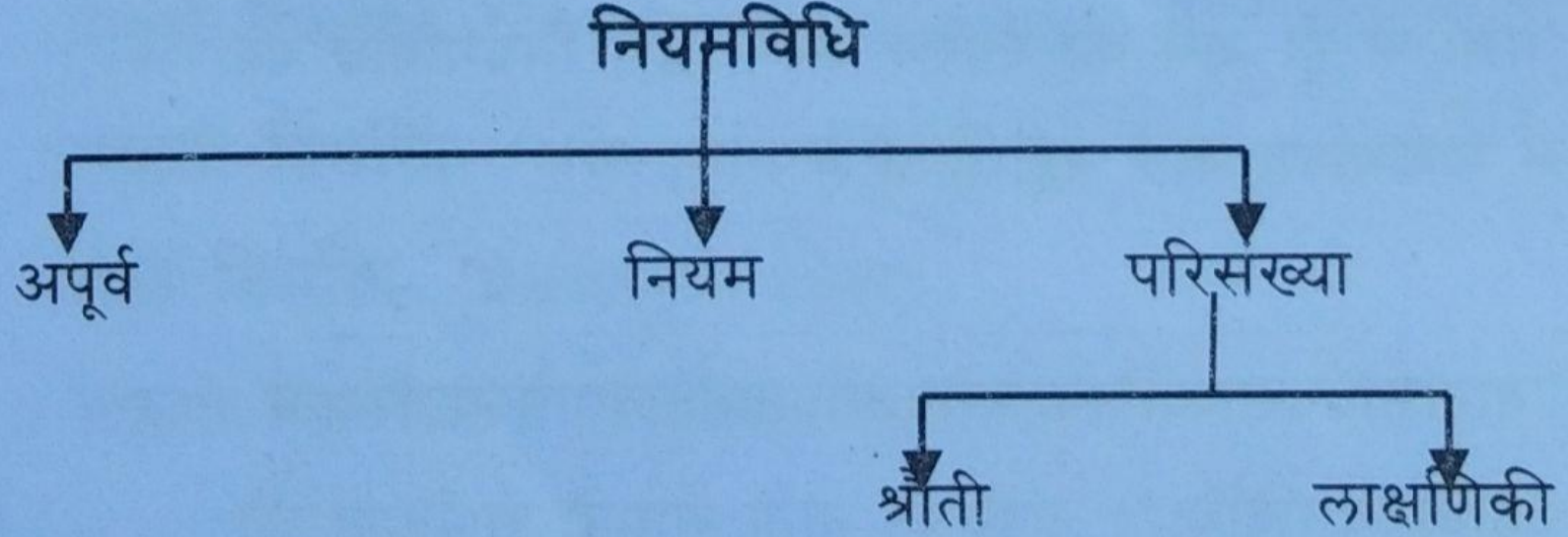

820983 -net.com

(3) नामधेय

नामधेयः- **"नामधेयानां च विधेयार्थपरिच्छेदकतयार्थत्त्वम्"**। नामधेय विजातीय की निवृत्तिपूर्वक विधेयार्थ का निश्चय करता हुआ सार्थक होता है। **यथा- 'उद्भिदा यजेत पशुकामः'** ।

नामधेय के निमित्तचतुष्टय-

1. **मत्वर्थलक्षणाभयात्-** 'उद्भिदा यजेत पशुकामः'।
2. **वाक्यभेदभयात्-** 'चित्रयायजेत पशुकामः'। **चित्रया-** द्रव्येन ।
3. **तत्प्रख्यशास्त्रात्-** 'अग्निहोत्रं जुहोति/यदाहवनीये जुहोति'।
4. **तद्व्यपदेशात्-** 'श्येनेनाभिचरन् यजेत'।

8209837844 www.ugc-net.com

(4) निषेध

निषेधः- "पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः"। जो वाक्य पुरुष को किसी क्रिया को करने से निवृत्त कराता है, उसे 'निषेध' कहते हैं।

यथा- 'कलञ्जं न भक्षयेत्'।

नञ् अर्थ के प्रत्ययार्थ अन्वय के दो बाधक हैं-

1. तस्य व्रतमुपक्रम- 'नेक्षेतोद्यन्तमादित्यम्'।
2. विकल्पप्रसक्ति- 'यजतिषु ये यजामहं करोति नानुयाजेषु'।

8209837844 www.ugc-net.com

(5) अर्थवाद

अर्थवाद- **"प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरंवाक्यमर्थवादः"**। प्रशंसापरक अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं। **(प्रत्यक्ष प्रमाण)**

अर्थवाद के दो प्रभेद-

1. **विधिशेष**- वाच्यार्थ – **'वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता'**।

   विधिवाक्य - "वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः"।

2. **निषेधशेष**- **'सोऽरोदीत'**।

विधिवाक्य "बर्हिषि रजतं न देयम्"

8209837 c-net.com

दूसरे दृष्टिकोण से अर्थवाद के तीन प्रभेद-

1. गुणवाद 2. अनुवाद 3. भूतार्थवाद

"विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते।
भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मतः"।।

1. गुणवाद- **"प्रमाणान्तरविरुद्धार्थबोधको गुणवादः"**। जिस अर्थवाद का दूसरे प्रमाण से निरोध होता है। **उदा.- (आदित्यो यूपः)**। **(लक्षणा)**

2. अनुवाद- **"प्रमाणान्तरप्राप्त्यर्थबोधकोऽनुवादः"**। जिसके अर्थ का ज्ञान अन्य प्रमाण से प्राप्त होता है। **उदा.- (अग्निर्हिमस्य भेषजम्)**

3. भूतार्थवाद- **"प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थ बोधको भूतार्थवादः"**। जिसका दूसरे प्रमाण से विरोध भी न हो रहा हो और जिसके द्वारा प्रतिपादित अर्थ वा बोध अन्य प्रमाण से भी सम्भव न हो। **उदा.- (इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्)**

8209837844

www.ugc-net.com

मीमांसा दर्शन के प्रमुख ग्रन्थ-

मीमांसासूत्र - महर्षि जैमिनि,

शाबरभाष्य - शबर स्वामी,

तंत्रवार्तिक - कुमारिल भट्ट

श्लोकवार्तिक - कुमारिल भट्ट,

लौगाक्षिभास्कर की कृतियां-

1. तर्ककौमुदी 2. अर्थसङ्ग्रह

अर्थसङ्ग्रह की व्याख्यायें-

रामेश्वरशिवयोगिभिक्षु - **कौमुदी**

पट्टाभिरामशास्त्री - **अर्थालोक**

डा.वाचस्पतिउपाध्याय - **अर्थालोकलोचन**

8209837844 www.ugc-net.com

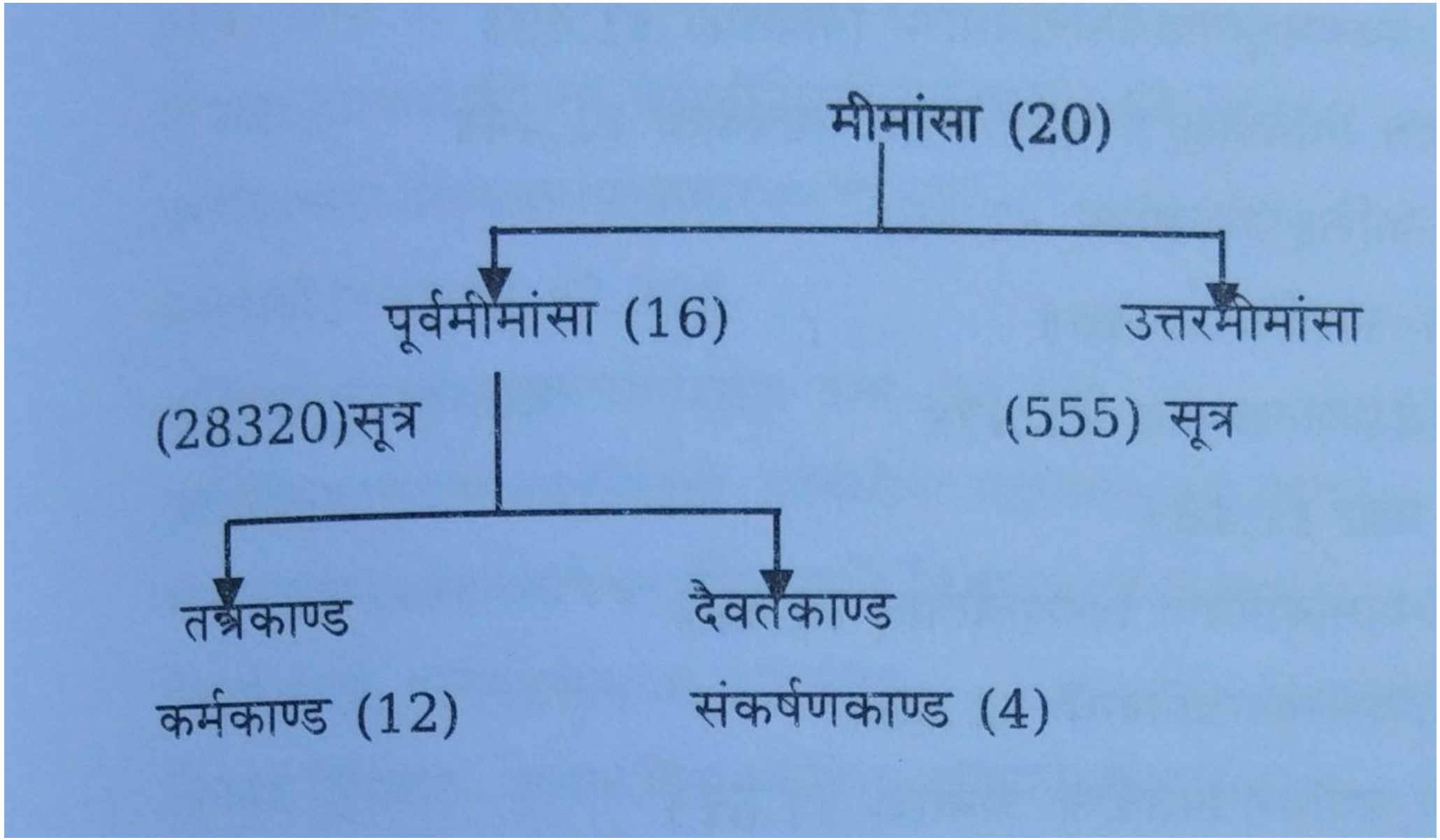

8209837844 www.ugc-net.com

दर्शन-

1. निगम परम्परा 2. आगम परम्परा 3. श्रमण परम्परा

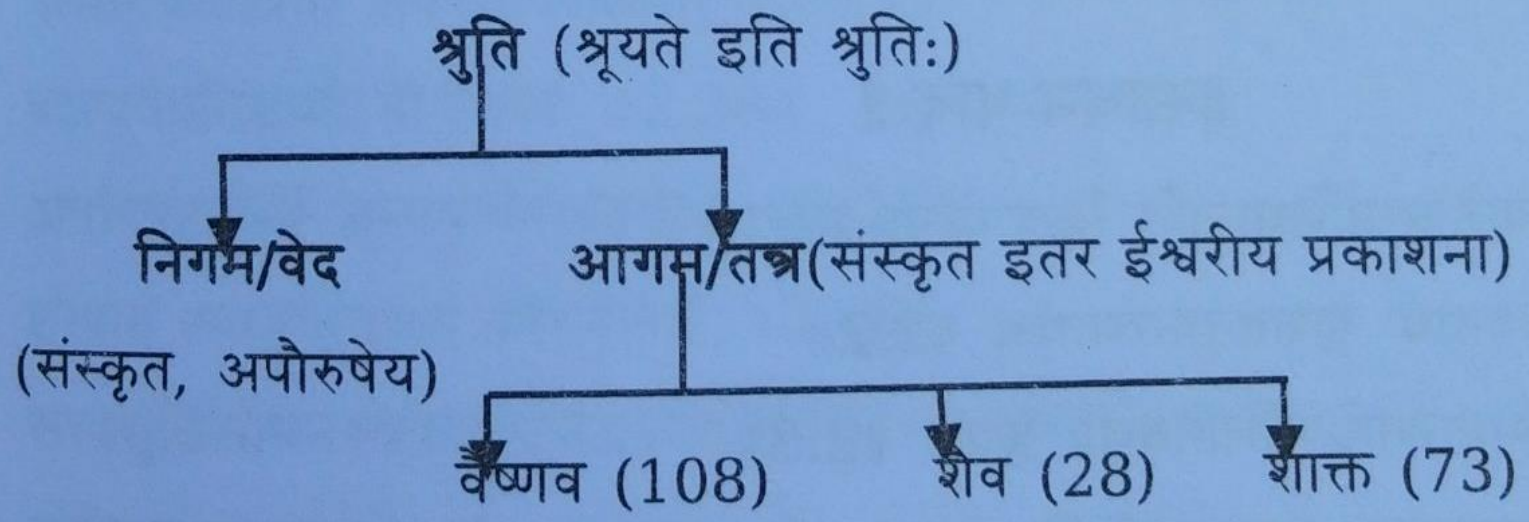

चतुर्दश विद्या -

"पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
वेदः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।।"

Next class....

✵ योग दर्शन ✵

Home work Question....

26. पूर्वमीमांसादर्शने कति अध्यायाः सन्ति -

(A) 5 (B) 12

(C) 20 (D) 16

27. 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते ?

(A) 'अथ' शब्दः (B) 'अतः' शब्दः

(C) 'धर्म' शब्दः (D) 'जिज्ञासा' शब्दः

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information....

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU